IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.67
Volume 5, Issue 1, March 2025

फिल्म जगत में संगीत तालों का स्वरूप

दुर्गेश चन्द्र विश्वकर्मा[1] and डॉ. मंजू श्रीवास्तव[2]
शोधार्थी, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), जमुनीपुर, कोटवा, प्रयागराज[1]
विभागाध्यक्ष(संगीत विभाग), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), जमुनीपुर, कोटवा, प्रयागराज[2]

संक्षिप्त सार

फिल्म जगत में ताल एक प्राचीन संगीत अवधारणा है जिसका पता हिंदू धर्म के वैदिक युग के ग्रंथों जैसे सामवेद और वैदिक भजनों को गाने के तरीकों से लगाया जा सकता है। उत्तर और दक्षिण भारत की संगीत परंपराएँ, विशेषकर राग और ताल प्रणालियाँ, लगभग 16वीं शताब्दी तक अलग नहीं मानी जाती थीं। इसके बाद, भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामी शासन के अशांत काल के दौरान, परंपराएँ अलग हो गईं और अलग-अलग रूपों में विकसित हुईं। उत्तर की ताल प्रणाली को हिंदुस्तानी कहा जाता है , जबकि दक्षिण को कर्नाटक कहा जाता है । हालाँकि, उनके बीच ताल प्रणाली में अंतर की तुलना में अधिक सामान्य विशेषताएं हैं। भारतीय परंपरा में ताल संगीत के समय आयाम को समाहित करता है, जिसके माध्यम से संगीत की लय और रूप को निर्देशित और व्यक्त किया जाता है।जबकि एक ताल संगीत मीटर को वहन करता है, यह जरूरी नहीं कि एक नियमित रूप से आवर्ती पैटर्न को दर्शाता हो। प्रमुख शास्त्रीय भारतीय संगीत परंपराओं में, संगीत के टुकड़े को कैसे प्रस्तुत किया जाना है, इसके आधार पर बीट्स को पदानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित किया जाता है। दक्षिण भारतीय प्रणाली में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला ताल आदि ताल है । भारतीय फिल्म प्रणाली में, सबसे आम ताल तीनताल है । इस शोध को पूरा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रिय पत्र -पत्रिका,पुस्तकालय आदि से सूचनाओं को ग्रहण किया गया है ।

मुख्य शब्द :-ताल,संगीत,विधा आदि